

# जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी ने मनाया अपने विश्वनरी फाउंडर-लाला लक्ष्मीपत सिंघानिया का 108वां जन्मोत्सव

■ जलसेवीप संवाददाता, जयपुर

अनुभव आधारित शिक्षा के मामले में सबसे आगे, जे के लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी ने अपने संस्थापक लाला लक्ष्मीपत सिंघानिया का 108वां जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया



जिसमें ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रो. अनिल डी. सहस्त्रबुधे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। वह समारोह जयपुर स्थित 30 एकड़ भूमि में फैले आधुनिक और वातावरण के अनुकूल यूनिवर्सिटी के कैम्पस में शुक्रवार को आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा



दोप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के बाद स्वर्गीय लाला लक्ष्मीपत सिंघानिया की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. आर.एल. रैना ने कार्यक्रम में पथारे अतिथियों का स्वागत किया और पिछले एक साल के दौरान यूनिवर्सिटी द्वारा की गई नई पहलों के बारे में जानकारी दी।

स्वागत अभिभाषण यूनिवर्सिटी के चांसलर भरत हरी सिंघानिया ने प्रस्तुत किया। इस अभिभाषण में उन्होंने कहा कि जेकेओ का मूलमंत्र है हर किसी के लिए बेहतरीन शिक्षा और गुणवत्ता उपलब्ध कराना। अपने पिता स्वर्गीय लाला लक्ष्मीपत सिंघानिया और अपने

भाई स्वर्गीय हरी शंकर सिंघानिया को याद करते हुए उन्होंने जेकेओ के सिद्धांतों की बात की और उन्होंने छात्रों से यह अपील की कि वे कैम्पस में रहते हुए अपने समय और ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाएँ ताकि खुद को भविष्य के लिए तैयार कर सकें। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति खुद में सुधार लाकर ही दुनिया को बदलने का काम कर सकता है। उन्होंने नए 'इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन' की शुरुआत की भी घोषणा की जहाँ इंटरनेशनल डिजाइन, प्रॉडक्ट डिजाइन और ट्रांस डिमिप्सिलनरी डिजाइन से सम्बंधित कोर्स 2019-20 के अकादमिक वर्ष से चलाए

जाएँगे। अपने अभिभाषण में ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रो. अनिल डी. सहस्त्रबुधे ने कहा कि, आज के दौर की सबसे बड़ी जरूरत है छात्रों में इस तरह के कौशल का विकास करना जिससे उनके रोजगार के अवसर बढ़ें, उनको सैद्धांतिक शिक्षा के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी भरपूर हो और जो सस्टेनेबल भी हो।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आज के समय में फेलियर का डर त्यागकर शिक्षा में प्रयोगात्मक और आविष्कारी सिस्टम को बढ़ावा देने की जरूरत है।

उन्होंने इस ओर ध्यान आकर्षित किया कि आज भी देश के आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान भी परम्परागत शिक्षा पद्धति पर चल रहे हैं, ऐसे में निजी संस्थानों को इस दिशा में कदम बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि समसामयिक शिक्षा के लिए नए तरीके अपनाएँ और जांचे जा सकें।

देश में नई प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग (पीबीएल) की शुरुआत और बोस्टन यूएसए के ऑलिन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के साथ सहयोग स्थापित करने के लिए जेकेएलयू की पहल की सराहना करते हुए उन्होंने यह खुलासा किया कि सरकार मूल्यांकन के सिस्टम में इस तरह से सुधार लाने जा रही है जिससे शिक्षा के क्षेत्र में मैलिक्ता और नए आविष्कारों को अधिक महत्व दिया जाए न कि पुरानी किताबी जानकारी के नए प्रस्तुतिकरण को।

यह महसूस करते हुए कि जेकेएलयू न सिर्फ बेहतरीन समाधान विकसित किया है बल्कि विदेश से बेहतरीन फैकल्टीज को भी यहाँ लेकर आया है और साथ ही योग्य स्थानीय फैकल्टीज का समायोजन भी किया है, उन्होंने जेकेएलयू से यह गुजारिश की कि वह बीपीएल को लागू करने के अपने अनुभवों को अन्य भारतीय यूनिवर्सिटीज के साथ भी साझा करे ताकि इस नई आविष्कारी पहल का लाभ पूरे भारतीय शिक्षा सिस्टम को मिल सके।